# 5

# बाइबल का बूमरैंग

## ( मत्ती 5:7 )

हम में से कइयों ने ऑस्ट्रेलियाई आदिवासियों[1] द्वारा खोजी गई वह मुड़ी हुई छड़ी बूमरैंग[2] के बारे में सुना है,जो हवा में बड़े दिलकश ढंग से उड़ती हुई फैंकने वाले के पास ही लौट आती है।[3]

यानी यदि उसे सही ढंग से फैंका जाए तो यह फैंकने वाले के पास लौट आती है। जब हम ऑस्ट्रेलिया में रहते थे, तब मैंने कई बूमरैंग खरीदे थे, और उन्हें फैंकने की कोशिश भी की थी। वे मेरी ओर लौट आते थे, पर आवश्यक नहीं कि मेरे पास आएं। बुरी तरह से फैंके गए बूमरैंग को लेने के लिए मुझ कुछ पेड़ों पर चढ़ना पड़ता था।

बाइबल में कई आत्मिक ''बूमरैंग'' हैं। मेरे गलत ढंग से फैंके गए बूमरैंगों के विपरीत से *हमेशा* उसी के पास लौट आते हैं, जिसने इन्हें फैंका होता है। आइए कुछ पर विचार करते हैं:

> ... क्योंकि मनुष्य जो कुछ बोता है [यहां बूमरैंग चक्कर खाता हुआ जाता है], वही काटेगा [यहां वह आ जाता है, फैंकने वाले के पास] (गलातियों 6:7)।
>
> अपनी रोटी जल के ऊपर [बाहर को] डाल दे, क्योंकि बहुत दिन के बाद तू उसे फिर [वापस] पाएगा (सभोपदेशक 11:1)।
>
> क्योंकि, जिस प्रकार तुम दोष लगाते हो [बाहर को], उसी प्रकार तुम पर भी दोष लगाया जाएगा [वापस]; और जिस नाप से तुम नापते हो [बाहर को], उसी से तुम्हारे लिए भी नापा जाएगा [वापस] (मत्ती 7:2)।[4]
>
> दिया करो [बाहर को], तो तुम्हें भी दिया जाएगा [वापस]: लोग पूरा नाप दबा दबाकर और हिला हिलाकर और उभरता हुआ तुम्हारी गोद में डालेंगे, क्योंकि जिस नाप से तुम नापते हो [बाहर को], उसी से तुम्हारे लिए भी नापा जाएगा [वापस] (लूका 6:38)।

इस समय हम धन्य वचनों का अध्ययन कर रहे हैं। उनके बीच में हमें बाइबल का यह बूमरैंग मिलता है: ''धन्य हैं वे, जो दयावन्त हैं, क्योंकि उन पर दया की जाएगी'' (मत्ती 5:7)। ऐसे संसार में जो आमतौर पर दया रहित हो, ऐसे पुरुषों और स्त्रियों, लड़कों और लड़कियों की जबर्दस्त मांग है, जो दयावंत हो। कई टीकाकारों का मानना है कि इस धन्य वचन के साथ ज़ोर दिए जाने में अन्तर है। डी. मार्टिन लायर्ड-जोन्स ने लिखा है:

> ... पहले तीन धन्य वचनों की चिन्ता ... आवश्यकता की हमारी समझ है-जिसमें मन के दीन लोग अपने पापी होने के कारण शोक करते हैं, जो अपने स्वभाव को समझने के कारण बहुत नम्र हैं ...। फिर आवश्यकता का बड़ा कथन आता है ... : ''धन्य हैं वे, जो

दयावन्त हैं, क्योंकि उन पर दया की जाएगी।'' ... यहां से ही हम सन्तुष्टि के परिणाम को ढूंढ रहे हैं ...। हम दयावंत मन के शुद्ध, मेल कराने वाले बनते हैं।[5]

## ''धन्य हैं, वे जो दयावन्त है ...।''

**दया का अर्थ**

मेरी मेज़ पर पड़े शब्द कोष में ''दया'' की परिभाषा है ''करुणामय व्यवहार, विशेषकर उनके साथ, जो किसी के अधिकार के अधीन हों ...। दयालु और क्षमा करने वाले होना दिखाना।''[6] अनुवादित शब्द ''दया'' के लिए सबसे सामान्य यूनानी शब्द (*eleos*) का अर्थ ''दयनीय और दलितों के प्रति दयालुता या शुभ इच्छा, उन्हें राहत देने के लिए उनके साथ मिल जाना है।''[7] दया को नकारात्मक अर्थ में व्यक्त किया जा सकता है। जब बदला लेने का अधिकार हमारे वश में हो तो उसके साथ, जिसने हमारे साथ दुर्व्यवहार किया हो, दया दिखाने का अर्थ उस पर दया करके और क्षमा देते हुए उसके साथ वैसा व्यवहार न करना है, जिसके वह योग्य हो। सकारात्मक रूप में देखें तो दया के कई अनिवार्य पहलू हैं। यह ज़रूरतमंदों की दशा से तरस भरे होने वाले मन की स्थिति है। यह ज़रूरतमंदों की सहायता करने के लिए उकसाती है और वास्तव में वह करके जिसे कोई कर सकता है, दिखाई जाती है। किसी ने कहा है कि दया में दिल और हाथ दोनों का काम होता है। जब तक दिल में तरस नहीं आता और जब तक हाथ सहायता करने के लिए आगे नहीं बढ़ते, यह दया नहीं है।

धन्य सामरी के दृष्टांत में दया के विभिन्न पहलू दिखाए गए हैं (लूका 10)। एक आदमी सड़क के किनारे पड़ा है, उसे मार-मार कर अधमरा कर दिया गया है (आयत 30)। कई लोग उधर से निकले (आयतें 31, 32) उसकी तरस योग्य हालत देखकर वे दुखी ज़रूर हुए, पर कुछ भी करने के लिए उनका मन नहीं पिघला, फिर एक सामरी आदमी वहां से गुज़रा। उसने ''देखकर तरस खाया'' (आयत 33) और उसकी सहायता के लिए जो कुछ भी कर पाया, उसने किया। उसने उसके घावों पर मरहम लगाए और पट्टी बांधी, वह उसे सराय में ले आया और उस घायल की देखभाल का खर्च उठाया (आयतें 34, 35)। इसी कारण सामरी को ''वही जिसने उस पर *तरस खाया*'' के रूप में वर्णित किया गया (आयत 37)।

और उदाहरण भी दिए जा सकते हैं।[8] पर दया के गुण को परमेश्वर की ओर देखकर बेहतरीन ढंग से समझाया जा सकता है। शैतान ''झूठ का पिता है'' (यूहन्ना 8:44), जबकि परमेश्वर ''दया का पिता'' (2 कुरिन्थियों 1:3)।[9] हमें कितने शुक्रगुज़ार होना चाहिए कि ''प्रभु अत्यन्त करुणा और दया'' करने वाला है (याकूब 5:11) यानी वह ''दया का धनी'' है (इफिसियों 2:4)! यदि परमेश्वर केवल न्याय करने वाला परमेश्वर ही होता तो मनुष्यजाति के लिए कोई आशा नहीं होती, ''क्योंकि सब ने पाप किया और परमेश्वर की महिमा से रह गए हैं'' (रोमियों 3:23)। परन्तु वह प्रेम का परमेश्वर भी है। ''वह हमारी सृष्टि जानता है और उसे स्मरण रहता है कि मनुष्य मिट्टी ही है'' (भजन संहिता 103:14)। प्रेमी परमेश्वर होने के कारण उसने हम पर अपनी दया की है, क्योंकि उसने अपने पुत्र को हमारे पापों के लिए मरने भेज दिया।

... क्रूस पर ''करुणा[10] और सच्चाई आपस में मिल गई हैं; धर्म और मेल ने आपस में चुम्बन किया है'' (भजन संहिता 85:10)। सच्चाई कहती है, मनुष्य को परमेश्वर के नगर से उसके पाप को रोकते हैं; करुणा कहती है, मसीह के लहू को मनुष्य को मनुष्य की सब कमियां छिपाने दो। धार्मिकता कहती है, पापी के लिए स्वर्ग की दहलीज़ पार करना सही नहीं है; मेल कहता है, मसीह को मध्यस्थ बनने दो, ताकि मनुष्य उसके बनाने की आपस में सुलह हो जाए![11]

परमेश्वर की दया को समझने के लिए, यीशु के जीवन से दिखाई गई खूबी से सहायता मिलती है (देखें यूहन्ना 14:9)। दया के कारण यीशु को इस पृथ्वी पर आना पड़ा। दया के कारण बीमारों और दुखी लोगों के बीच से गुज़रना पड़ा। उसकी दया केवल लाचार और दुखी लोगों पर ही नहीं हुई, बल्कि घमण्डी फरीसियों और निर्दयी सदूकियों के लिए भी दी गई। और हां अपने आप से संतुष्ट और अविश्वासी यरूशलेम के लिए भी। उसकी दया मनुष्य के दुख के साथ-साथ मनुष्य के पाप के लिए भी दिखाई गई। उसकी दया अन्त में उसे क्रूस तक और अब स्वर्ग में ले गई, परमेश्वर के दाहिने हाथ वह हमारा ''दयालु और विश्वासयोग्य महायाजक'' है (इब्रानियों 2:17)।

**दया की आवश्यकता**

''परमेश्वर की दया'' पर ध्यान करते हुए (रोमियों 12:1), हमें यीशु की ओर से यह चुनौती मिलती है: ''जैसा तुम्हारा पिता दयावन्त है, वैसे ही तुम भी दयावन्त बनो'' (लूका 6:36)। इसका क्या अर्थ है कि जैसे प्रभु दयावन्त है, वैसे ही हम भी बनें? पहले तो इसका अर्थ है कि हमारे *मन* दूसरों की आवश्यकताओं से *दया* से भर लाएं। लोग यीशु से मिन्नत करते ''हमारे ऊपर दया कर'' (देखें मत्ती 9:27) और वह करता था। बार-बार यह कहा गया है कि ''उसे तरस आया'' या ''उसने तरस खाया'' (देखें मत्ती 9:36; 14:14; 20:34; मरकुस 1:41; 6:34)। इसी प्रकार आपको और मुझे भी ''बड़ी करुणा और भलाई'' करने वाले बनने को कहा गया है (कुलुस्सियों 3:12)।

राल्फ बम्पस[12] की पसन्दीदा कहानियों में से एक उस आदमी की है जिसने बुरे समय देखे थे। उसने किसी बैंकर से कर्ज़ मांगा, जो किसी को भी जो सचमुच में ज़रूरतमंद हो, कर्ज़ देने में आनाकानी करने में प्रसिद्ध था। आदमी की दुखद कहानी सुनने में प्रसिद्ध था। आदमी की दुखद कहानी सुनने के बाद बैंकर ने कहा, ''मैं अच्छा व्यक्ति नहीं हूं, इसलिए मैं तुम्हारे सामने एक प्रस्ताव रखता हूं, मैंने हाल ही में नकली आंख लगवाने में काफी धन खर्च किया है। यह हू-ब-हू मेरी असली आंख की तरह ही लगती है। सो मेरा प्रस्ताव यह है: यदि तुम बता दो कि मेरी नकली आंख कौन सी है तौ मैं तुम्हें कर्ज़ दे दूंगा।'' आदमी ने कुछ देर तक उस बैंकर की आंखों को देखा। अन्त में उसने कहा, ''बाईं आंख नकली है।'' बैंकर ने फिर पूछा, ''तुम्हें पक्का यकीन है!'' आदमी ने कहा, ''हां, पक्का है।'' बैंकर चकित था। वह बोला, ''तुम सही हो, पर यह बताओ कि तुम्हें कैसे पता चला कि बाईं आंख नकली है?'' आदमी ने उत्तर दिया, ''क्योंकि, आपकी बाईं आंख में मुझे दया की थोड़ी सी चमक दिखाई दी।''

जब लोग हमारी आंखों में देखते हैं तो क्या वे वास्तविक दया को देख पाते हैं? यीशु

की तरह ही हमारी दूसरों की निर्बलताओं पर उनके साथ सहानुभूति होना आवश्यक है (देखें इब्रानियों 4:15)। हमारे मन ऐसे हों, जो दूसरों की आवश्यकताओं के लिए दया से भर जाएं।

ऐसे में *हाथों* की भी की आवश्यकता है, जो सहायता के लिए निकलें। याद रखें कि मन और हाथ दोनों के शामिल हुए बिना वास्तविक दया नहीं हो सकती। यदि हम ऐसे भाइयों और बहनों को देखें ''जिनके पास कपड़े और प्रतिदिन भोजन की घटी हो,'' तो उनके लिए केवल दुखी होना ही काफी नहीं है। हमें चाहिए कि ''जो वस्तुएं देह के लिए आवश्यक हैं वह उन्हें दे'' (याकूब 2:15, 16)। मुझे यीशु के लिए इस्तेमाल होने वाला कथन पसन्द है कि उसने ''तरस *खाकर*'' कोई काम किया (देखें मत्ती 20:34; मरकुस 1:41)। जब यीशु को तरस आया तो उसका मन दुखी हुआ और उसने कुछ *किया;* यानी अपनी दया दिखाई (देखें मरकुस 5:19)। इसी प्रकार आप को और मुझे चाहिए कि ''एक-दूसरे के साथ कृपा ['रहम'; KJV] और दया से काम करें'' (जकर्याह 7:9)।[13]

फिर से मैं धन्य वचनों के स्वाभाविक प्रवाह पर ज़ोर देता हूं। अपनी आत्मिक कमी को समझ लेने (धन्य वचन नम्बर एक) इसके कारण शोक करने (नम्बर दो) वाला व्यक्ति नम्र और दीन बन जाएगा (नम्बर तीन) और आत्मिक खुराक की इच्छा करेगा (नम्बर चार)। इतनी समझ पा लेने वाला व्यक्ति समझ जाएगा कि दूसरों की भी वही आत्मिक आवश्यकताएं हैं और उनमें भी वही आत्मिक कमी है। इससे उसे उनके साथ व्यवहार करते हुए तरस, सहानुभूति करूंगा और प्रेम से भर जाना चाहिए।

इस कारण हम में से हर किसी को अपना मूल्यांकन करना कितना आवश्यक है। अपने आप से पूछें ''क्या मैं दयालु हूं, या मुझे केवल अपनी ही आवश्यकताओं और समस्याओं का ध्यान है और दूसरों की कोई चिन्ता नहीं है?'' होशे 6:6 में प्रभु ने कहा, ''क्योंकि मैं बलिदान से नहीं, स्थिर प्रेम से ही प्रसन्न होता हूं।'' NASB में ''स्थिर प्रेम'' का अनुवादित शब्द ''वफादारी'' LXX में *eleos* (''दया'') से अनुवादित किया जाने वाला शब्द *chesed* है। KJV में ''क्योंकि मैं दया चाहता हूं, न कि बलिदान'' है। यीशु ने नये नियम में होशे 6:6 को दो बार दोहराया। दोनों बार उसने अपने सुनने वालों को इन शब्दों के अर्थ को समझने की चुनौती दी (मत्ती 9:13; 12:7)। क्या परमेश्वर बलिदान चाहता है।14 हां, पर बिना दया के बलिदान बेकार है। गलत समझे जाने का जोखिम उठाते हुए मैं कहना चहता हूं कि बपतिस्मा लेना और प्रभु भोज में भाग लेना आवश्यक है, बल्कि बेहद ज़रूरी है, पर यदि हमारे मनों में कोई तरस या दया नहीं है, तो परमेश्वर की इच्छा को ऊपरी तौर पर मानना केवल दिखावा रह जाएगा (1 कुरिन्थियों 13:1-3 से तुलना करें)।

हमारे वचन पाठ ''धन्य है वे जो दयावन्त हैं'' में इस्तेमाल किए गए शब्द को देखें। दयावन्त के लिए अंग्रेजी शब्द *''merciful''* का अर्थ है ''दया से भरपूर''[15] किसी बुजुर्ग से पूछा गया कि क्या वह मसीही है। जवाब मिला, ''कहीं-कहीं।''[16] हमें केवल ''कहीं-कहीं'' मसीही नहीं बनाना है। दयावन्त होने का अर्थ करुणा का कभी-कभी या बीच-बीच में किया जाने वाला कार्य नहीं है, बल्कि यह तो परवाह करने और सहायता करने वाली जीवनशैली है। परमेश्वर करे कि हम स्वार्थी न हों, बल्कि दूसरों के प्रति ''करुणा से भरे'' हों।

## ''... क्योंकि उन पर दया की जाएगी।''

क्या हमें दया की आवश्यकता है? मेरी दादी होती हो अपनी आंखें घुमाती, हवा में अपने हाथ उठाती और कहती, ''हां, हां, है!'' पीछे को देखें। हमने बिना करुणा के इतनी उम्र कैसे दी? वर्तमान को देखें। आज हमें परमेश्वर की करुणा कि कितनी आवश्यकता है! भविष्य को देखें। हम इसके बिना कैसे कह सकते हैं? फिर भी याद रखें कि दया किए जाने की प्रतिज्ञा केवल उन्हीं के लिए है, जो दयावान हैं। हमारे वचन पाठ में ''उन पर ज़ोर दिया गया है।''[17] ''धन्य हैं वे जो दयावान हैं, *क्योंकि* उन पर दया की जाएगी।'' हमने बूमरैंग को घूमकर निकलते देखा है: आइए अब इसे वापस आते देखते हैं।

### इस जीवन में दया

दयावानों पर दया की जाती है क्योंकि जैसा यीशु ने कहा, ''लेने से देना धन्य है'' (प्रेरितों 20:35)। बुद्धिमान ने लिखा है ''जो दीन लोगों पर अनुग्रह करता, वह धन्य होता है'' (नीतिवचन 14:21)। विलियम शेक्सपियर ने अपने एक पत्र से कहलवाया:

> करुणा का गुण ... गिरता है,
> आकाश से गिरने वाली कोमल वर्षा सा
> निचले स्थान पर: यह दोहरी आशीष वाला है:
> एक तो इसने उसे आशीषित किया, जो देता है,
> और उसे भी जो इसे पाता है।[18]

दया करने वाले लोग धन्य हैं, क्योंकि उन्हें अपने आस-पास के लोगों से और दया मिल सकती है। यह सामान्य सच्चाई है, पूर्ण नहीं-पर आमतौर पर दूसरे लोग हमारे साथ वैसे ही व्यवहार करते हैं जैसे हम उनके साथ करते हैं।[19] यदि आप किसी को देख कर मुस्कुराते हैं तो वे आमतौर पर मुस्कुरा कर ही जवाब देते हैं। यदि आप किसी को ''सलाम'' कहते हैं तो वे भी ''सलाम'' कह कर ही जवाब देते हैं। यदि आप किसी के बीमार होने पर उसकी सहायता करते हैं तो आप के बीमार होने पर वे भी आपकी सहायता करते हैं। पतरस ने इस सच्चाई का नकारात्मक पहलू दिया है: ''यदि तुम भलाई करने में उत्तेजित रहो तो तुम्हारी बुराई करने वाला फिर कौन है?'' (1 पतरस 3:13; देखें नीतिवचन 16:7)। हम इसका उलटा सुनहरी नियम मान सकते हैं (मत्ती 7:12) कि जैसे तुम दूसरों के साथ करते हो (आमतौर पर) वे वैसा ही तुम्हारे साथ करेंगे।

सबसे महत्वपूर्ण दया करने वाले लोग धन्य हैं, क्योंकि परमेश्वर उनके साथ दयावन्त होगा। परमेश्वर ने कहा कि यदि हम दीन लोगों पर दयावन्त हैं तो वह हमें छुड़ाएगा। ''क्या ही धन्य है वह, जो कंगाल की सुधि रखता है! विपत्ति के दिन यहोवा उसको बचाएगा'' (भजन संहिता 41:1)। उसने प्रतिज्ञा की कि यदि हम दूसरों को क्षमा करने में दयावन्त हैं तो वह हमें क्षमा कर देगा। ''इसलिए यदि तुम मनुष्यों के अपराध क्षमा करोगे, तो तुम्हारा स्वर्गीय पिता भी तुम्हें क्षमा करेगा'' (मत्ती 6:14)।

इसका अर्थ यह नहीं कि परमेश्वर हमसे केवल दयावन्त और क्षमा करने वाले ही होने की

इच्छा या मांग करता है। हमारे लिए ''*हर एक* वचन से जो परमेश्वर के मुख से निकलता है जीवित'' रहना आवश्यक है (मत्ती 4:4)। परन्तु इसका अर्थ यह है कि अन्य सब बातें समान होने पर दयावान व्यक्ति धन्य होगा। आप इसे कैसे भी देखें, ''कृपाल मनुष्य अपना ही भला करता है'' (नीतिवचन 11:17)।

### इस जीवन के बाद की दया

हमें दया की आवश्यकता अभी तो है पर न्याय के परमेश्वर के सिंहासन के सामने जाने पर हमें इसकी इससे भी अधिक आवश्यकता होगी। उस समय हमारे ऊपर उसकी दया किसी हद तक हमारे दयावन्त होने पर आधारित होगी। पौलुस ने लिखा:

> उनेसिफुरुस के घराने पर प्रभु दया करे, क्योंकि उस ने बहुत बार मेरे जी को ठंडा किया, और मेरी जंजीरों से लज्जित न हुआ। पर जब वह में आया, तो बड़े यत्न से ढूंढ़कर मुझ से भेंट की। (प्रभु करे, कि उस दिन उस पर प्रभु की दया हो)। और जो-जो सेवा उस ने इफिसुस में की है उन्हें भी तू भली भांति जानता है (2 तीमुथियुस 1:16-18क)।

इस जीवन में यदि हम दयावन्त नहीं हैं तो क्या होगा? फिर हमारे ऊपर भी दया नहीं की जाएगी। मत्ती 18:23-35 में यीशु ने निर्दयी सेवक का दृष्टांत बताया। उसके मालिक ने उसे लाखों डॉलर का कर्ज माफ कर दिया था।[20] पर उसने अपने एक साथी का केवल कुछ डॉलर का कर्ज माफ नहीं किया। उसके स्वामी ने उससे कहा, ''सो जैसा मैं ने तुझ पर दया की, वैसे ही क्या तुझे भी अपने संगी दास पर दया नहीं करनी चाहिए थी?'' (आयत 33)। फिर ''उस के स्वामी ने क्रोध में आकर उसे दण्ड देने वालों के हाथ में सौंप दिया, कि जब तक वह सब कर्ज भर न दे, तब तक उन के हाथ में रहे'' (आयत 34)। यीशु ने अपनी बात इन गम्भीर शब्दों के साथ समाप्त की: ''यदि तुम में से हर एक अपने भाई को मन से क्षमा न करे, तो मेरा पिता जो स्वर्ग में है, तुमसे भी वैसा ही करेगा'' (आयत 35)।

याकूब 2:13 में हमें बाइबल के सबसे कठोर शब्द मिलते हैं: ''क्योंकि जिसने दया नहीं की, उसका न्याय बिना दया के होगा: दया न्याय पर जयवन्त होती है।'' बिना तरस के न्याय करने का अर्थ बिना आशा के होना है क्योंकि हम सब पापी है और पाप की मज़दूरी मृत्यु (रोमियों 3:23; 6:23) यानी आत्मिक मृत्यु है (देखें प्रकाशितवाक्य 21:8)। मुझे न्याय के दिन दया चाहिए, आपको नहीं चाहिए? तो फिर आपको और मुझे दयावन्त बनना आवश्यक है।

## सारांश

शास्त्रियों और फरीसियों पर ''हाय'' कहते हुए यीशु ने उन्हें बताया कि उन्होंने ''व्यवस्था की गम्भीर बातों को अर्थात *न्याय और दया* और विश्वास को छोड़ दिया है'' (मत्ती 23:23)। परमेश्वर हमारी सहायत करें कि हम दयावन्त होने को नज़रअंदाज़ न करें। यीशु जहां भी जाता लोग पुकारते थे, ''दया कर'' (देखें मत्ती 9:27; 15:22; 17:15; 20:30, 31)। वैसे ही संसार भी आज पुकारता है ''दया करो!'' प्रभु के चेले होने के कारण *हम* ही वे लोग हैं जिन्हें इस पुकार का उत्तर देना है। यीशु की तरह हमें भी चाहिए कि उन पर तरस खाएं जो शारीरिक और आत्मिक

रूप में दुखी हैं। याद रखें: ''धन्य हैं वे, जो दयावन्त हैं, क्योंकि उन पर दया की जाएगी।''

मेरा आग्रह है कि यह देखने के लिए कि आपके मन में दूसरों के लिए तरस या नहीं, इसकी जांच करें। मेरा आग्रह है कि आप ध्यान दें कि आप को अपनी ही आत्मिक आवश्यकताओं की परवाह है या नहीं। आप दूसरों की सहायता तब तक नहीं कर सकते जब तक परमेश्वर के साथ आपका अपना सम्बन्ध सही न हो। क्या आप ने अपने आपको परमेश्वर की दया पर छोड़ दिया है? क्या आप यीशु को परमेश्वर के पुत्र के रूप में मानते हैं और आज्ञापालन के द्वारा आपने अपने विश्वास को दिखाया है (यूहन्ना 8:24; 14:15)? क्या आपने अपने विश्वास का अंगीकार करके बपस्तिमा लेना है (प्रेरितों 8:36-38; KJV)? क्या आप को प्रभु के पीछे चलने के लिए फिर समर्पण करने की आवश्यकता है (देखें याकूब 5:19, 20)? बहुत पहले लिखा गया था: ''यदि तुम यहोवा की ओर फिरोगे तो जो तुम्हारे भाइयों और लड़के-बालों को बन्धुआ बना कर ले गए हैं, वे उन पर दया करेंगे, और वे इस देश में लौट सकेंगे क्योंकि तुम्हारा परमेश्वर यहोवा अनुग्रहकारी और दयालु है, और यदि तुम उसकी ओर फिरोगे तो वह अपना मुंह तुम से न मोड़ेगा'' (2 इतिहास 30:9; KJV)। अगर आप नहीं आए हैं तो मेरी प्रार्थना है कि आप आज ही उसके पास लौट आएं।

---

टिप्पणियां

[1]''आदिवासी'' वह शब्द है जिसका अर्थ ''मूल निवासी'' है (*दि अमेरिकन स्टैंडर्ड हैरिटेज डिक्शनरी,* चौथा संस्क. [2001], एस. वी. ''aborigine'') ऑस्ट्रेलिया में इसका अर्थ उन लोगों के लिए किया जाता है जो यूरोपीय लोगों के आगमन से पहले उस महाद्वीप में रहते थे। [2]इस पाठ का शीर्षक ह्यूगो मेकोर्ड, ''ए बूमरैंग,'' *हैप्पीनेस गर्रंटिड* (मरफ़्रीस्बोरो, टेनिसी: डिहॉफ़ पब्लिकेशंस, 1956), 37 पर आधारित था। [3]एक न वापस आने वाला बूमरैंग भी है जो बड़ा और भारी है और उसका इस्तेमाल शिकार के लिए किया जाता था। परन्तु इसकी व्याख्या करना आवश्यक नहीं है क्योंकि हम में से अधिकतर लोग बूमरैंग को *वापस जाने वाली* छड़ी मानते हैं। [4]इस नियम का एक उदाहरण न्यायियों 1:7 में मिलता है। एक और उदाहरण प्रकाशितवाक्य 18:6, 7 में बड़े बाबुल नगर पर कहा गया कठोर वाक्य है। [5]डी. मार्टिन लॉयड-जोन्स, *स्टडीज इन सरमस ऑन द माउंट,* अंक 1 (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1959), 107. [6]*दि अमेरिकन हैरिटेज डिक्शनरी,* चौथा संस्क., 2001 एस. वी. ''mercy.'' [7]सी. जी. विल्के एंड विलिबल्ड ग्रिम, *ए ग्रीक इंग्लिश लैक्सिकन ऑफ दि न्यू टैस्टामेंट,* अनु. और संशो. जोसेफ एच. थेयर (एडिनबर्ग, स्कॉटलैंड: टी. एंड टी. क्लार्क, 1901; रिप्रिंट, ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1977), 203. [8]उदाहरण के लिए उड़ाऊ पुत्र के दृष्टांत पर पिता ने वापस आने पर उस पर दया दिखाई। [9]''दया'' *eleos* समानार्थी शब्द से लिया गया है: *oiktirmos,* जिसका अर्थ ''तरस, दूसरों के दुखों के लिए करूणा'' के लिए है। (डब्ल्यू. ई. वाइन मैरिल एफ़. अंगर एंड विलियम व्हाइट, जूनि., *वाइन'स कम्पलीट एक्सपोज़िटरी डिक्शनरी ऑफ़ ओल्ड एंड न्यू टैस्टामेंट वर्ड्स* [नैशविल्ले: थॉमस नेल्सन पब्लिशर्स, 1985], 404.) [10]यह उद्धरण KJV से लिया गया है। NASB में दया की जगह ''प्रेमपूर्वक दया'' है। इब्रानी शब्द का अनुवाद ''प्रेम पूर्वक दया'' (*hesed* या *chesed*) का अनुवाद LXX (या पुराने नियम के धर्मशास्त्र के यूनानी अनुवाद, सप्तत्ति) में ''दया'' (*eleos*) किया गया है। (वही., 142.)

[11]मेकोर्ड, 38. [12]कई साल पहले राल्फ़ बम्पस कई क्षेत्रों में बाइबल स्कूल की कार्यशालाओं में प्रसिद्ध प्रचारक था। मैंने कई अवसरों पर उन्हें यह कहानी बताते सुना। [13]अपने सुनने वालों की कुछ विशेष आवश्यकताओं के बारे में प्रासंगिकता बनाने का यह सही स्थान होगा: क्षमा करने की आवश्यकता, दया करने की आवश्यकता, दूसरों की सहायता करने की आवश्यकता आदि। यदि इस पाठ का इस्तेमाल क्लास में होता है, तो छात्रों से उन ढंगों की सूची बनाने को कहें जिन से वे दया को व्यक्त कर सकते हों। [14]पुराने नियम में, पशुओं के बलिदान आवश्यक थे।

नये नियम में हमारे *जीवनों* का बलिदान होना आवश्यक है (देखें रोमियों 12:1, 2)। [15]''दया'' के लिए यूनानी शब्द *eleemon* है जो *eleos* का विशेषण है। इसका इस्तेमाल ''सक्रिय रूप में करुणामय होने के लिए होता है'' (वाइन, 404)। [16]डॉन हम्फ्री, द *बीटीच्यूड्स* (बर्लिंटग्न, मैसाचुएट्स: इटरनिटी प्रैस, 1969), 44. [17]''वे'' पर ज़ोर क्रिया रूप से पहले ''वे'' के लिए यूनानी शब्द के संयोग से दिया जाता है जिसमें ''वे'' शब्द शामिल हैं। [18] विलियम शेक्सपियर *दि मर्चेंट ऑफ वेनिस,* 4.1.184. [19]जब हाल ही में मैंने एक क्लास में एक पाठ पढ़ाया तो मैंने दयालू व्यक्ति पर दया के पास आने के उदाहरण पूछे, और क्लास के लोगों को उदाहरणों पर विचार करना कठिन लगा। जब हम दूसरों पर मुस्कुराते हैं तो बदले में जबकि हम इस पर इतना ध्यान नहीं देते। हम इसकी उम्मीद रखते हैं। हम जो बात याद *रखते* हैं वह यह है कि जब हम किसी पर मुस्कुराते हैं तो वह वापस मुस्कुराता *नहीं*। *या जब हम हम किसी का लाभ करते हैं तो वह बदले में हमारा भला नहीं* करता। अन्य शब्दों में हम नियम को नहीं बल्कि अपवाद को याद रखते हैं। [20]आधुनिक समय में सेवक के कर्ज के आकार को बता पाना कठिन है, पर यह इतना कर्ज था इसे चुकाया *नहीं* जा सकता था। सेवक केवल अपने स्वामी की दया पर निर्भर था।